मैं लिख-पढ़ सकती हूं

रानी पाल

मेरा नाम रानी पाल है। मैं पढ़-लिख सकती हूं। आपको मेरा यह परिचय बड़ा अजीब सा लगा होगा। मेरी कहानी पढ़ने के बाद आपको अहसास होगा कि मैं अपने आपको पढ़ा-लिखा कह कर कैसा अनुभव कर रही हूं।

मैं अलीगढ़ के गन्यावली गांव की रहने वाली हूं। हम एक भाई और चार बहने हैं। आज कल मैं चिल्का में रह रही हूं। यहां मेरे पति श्री डी॰पाल, मास्टरचीफ जी॰आई॰ हैं। इस समय मेरी उम्र लगभग 27 वर्ष है। मेरे तीन बेटे हैं। सबसे बड़ा लड़का नवीं कक्षा में पढ़ता है।

जब मैं छोटी थी, तब मुझे याद है—हमारे गांव से लगभग 7-8 मील दूर एक स्कूल था। वैसे हमारे गांव के बड़े-बूढ़े लड़कियों की पढ़ाई को अधिक महत्त्व नहीं देते थे मगर फिर भी मेरे घर वालों ने मुझे स्कूल भेजा। लेकिन एक तो स्कूल बहुत दूर था, मैं जाते-जाते थक गई। दूसरे-पहले ही दिन दोपहर को ऐसी घटना हुई जिसने मुझे लगभग 27-28 साल तक बिलकुल अनपढ़ रखा। दोपहर के समय जब सब बच्चे अपना-अपना खाना खा रहे थे तो मेरी रोटी कुत्ती ले कर भाग गई। मैं पूरे दिन भूखी रोती रही। गुस्से में मैंने उस बेचारी लड़की को भी काट लिया जो मुझे अपने साथ स्कूल लेकर आई थी।

कुछ स्कूल में भूखे रहने का डर, कुछ स्कूल के दूर होने का आलस्य और कुछ मेरे घर वालों का भी उत्साह न दिखाना। इन सब ने मिल कर कुछ ऐसा रंग दिखाया कि मैं कभी फिर पढ़ने नहीं गई। पूरे घर में बस मेरा भाई ऐसा था जो चाहता था कि मैं पढ़ूं। वह डांटता कि एक दिन भूखी रह गई तो मर तो नहीं गई, पढ़ने जाया कर।

लेकिन ऐसा कभी नहीं हो सका। मुझे देख कर मेरी दूसरी बहनों ने भी कभी स्कूल का मुंह नहीं देखा।

साढ़े तेरह वर्ष की उम्र में मेरी शादी हो गई। थोड़े समय बाद ही मुझे अपने अनपढ़ होने का अहसास होने लगा। जब मेरे पति जहाज पर चले जाते थे तो न तो मैं इन्हें चिट्ठी लिख सकती थी और न ही तब तक इनकी चिट्ठी सुन सकती थी जब तक कोई पढ़ कर सुनाने वाला न मिले। मुझे अपने अनपढ़ होने पर बड़ा गुस्सा आता। हनुमान चालीसा, आरती, धार्मिक किताबें, मैं कुछ भी नहीं पढ़ सकती थी। रेल में सफर करते समय हर स्टेशन पर पूछना पड़ता था कि कौन सा स्टेशन आया है। न अखबार पढ़ सकती थी न कोई कहानी की किताब। लगता था एक बार हाथ से निकला पढ़ाई करने का मौका फिर कभी नहीं मिलेगा। एक तो बच्चे छोटे-छोटे थे, दूसरे काम बहुत थे। मेरे पति ने कभी पढ़ाई करने के लिए मना तो नहीं किया लेकिन कभी ज़ोर भी नहीं दिया। फिर इतनी बड़ी होकर पढ़ाई करने में थोड़ी झिझक भी आती थी।

फिर मेरे सौभाग्य से हम चिल्का में आए। बच्चे थोड़े समझदार हो गए थे और बड़ा लड़का

आठवीं में पढ़ रहा था। यहां नौसेना स्त्री संघ की तरफ से प्रौढ़ शिक्षा की कक्षा लगती थी। आखिर मैंने हिम्मत करके नाम लिखवा ही दिया। मैं सुबह जल्दी उठ कर सारा काम खत्म करती और वेल्फेयर सेंटर पहुंच जाती। पड़ोसी बोलते थे—अब क्या पढ़ने जाती है? यह भी कोई उम्र है तेरे पढ़ने की। इतने बड़े-बड़े बच्चे हो गए हैं। मेरा जवाब होता, "पढ़ने जाती हूं कोई बुरा काम थोड़े ही है, शर्म कैसी? अनपढ़ रहना ज्यादा शर्म की बात है।"

मैं लगभग छः महीने में किताब पढ़ने लगी। टीचर के साथ-साथ मेरे बच्चों ने भी मेरी बहुत मदद की। आधे अक्षर और कुछ कठिन शब्द मेरी समझ में नहीं आते थे। मैं निशान लगा कर बाद में बच्चों से या टीचर से पूछती थी। सभी बड़े प्रेम से समझा देते थे।

आज मैं अच्छी तरह हिंदी लिख-पढ़ सकती हूं। घर में सभी खुश हैं कि अब मैं खुद चिट्ठी लिख और पढ़ सकती हूं। अखबार, कहानी की किताबें और धार्मिक किताबें पढ़ सकती हूं। पहले तो आरती भी नहीं पढ़ी जाती थी। अब तो मैं हनुमान चालीसा भी पढ़ लेती हूं।

सजावट, सफाई-सुथराई, फिल्म और देश विदेश के बारे में खूब पढ़ती हूं।

हाल ही में मैंने एक जगह पढ़ा था, भोपाल की गैस दुर्घटना के बाद वहां के लोगों को कैंसर हो रहा है। यह पढ़ कर मुझे बहुत दुख हुआ।

मेरी अपनी तो कोई लड़की नहीं है। अगर होती तो मैं उसे खूब लिखाती पढ़ाती, अपने लड़कों की तरह।

मुझे यह देख कर बड़ी खुशी होती है कि मेरी ससुराल के गांव में ही स्कूल खुल गया है। आज सभी लोग अपनी-अपनी बेटियों को पढ़ने भेजते हैं।

मैं अपने पड़ोस की अनपढ़ महिलाओं से कहती हूं कि वे भी पढ़ें और काफी ने मेरी बात मान भी ली है।

मैंने हिंदी तो सीख ली है, अब मैं गणित सीखना चाहती हूं। मुझे गिनती पहचानना आ गया है। चिल्का में रहते-रहते मैं ज़रूर गणित भी सीख लूंगी।

आज जब मैं अखबार, किताबें, हनुमान चालीसा पढ़ती हूं, चिट्ठी लिखती हूं और स्टेशनों के नाम खुद ही पढ़ लेती हूं तो आप अनुमान लगा सकते हैं मुझे कितना अच्छा लगता होगा।

इसीलिए मैंने शुरू में अपने परिचय में कहा था—"मेरा नाम रानीपाल है, मैं लिख-पढ़ सकती हूं।" □